Dainik Bhaskar 15 August, 2018

बुनियादी ढांचा | 60 लाख किलोमीटर है देश में रोड नेटवर्क

देश में पहले बिजली का संकट था, आज हम निर्यात कर रहे हैं

• डीएस रावत, *सेक्रेटरी जनरल, एसोचैम*

1947 में सिर्फ 1362 मेगावाट बिजली देश में पैदा हो पाती थी, वह मार्च 2015 में बढ़कर 267 गीगावाट हो गई। उस दौर में प्रति व्यक्ति बिजली की खपत 16.3 किलोवाट थी जो आज बढ़कर 1010 किलोवाट हो गई है। आज हम न केवल अधिक बिजली पैदा कर रहे हैं, बल्कि उसके निर्यातक भी हैं।

देश में 1947 से अब तक बुनियादी क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। फिर चाहे बात सड़कों की हो, रेल-हवाई या जल परिवहन की हो। साथ ही बिजली और पानी दोनों क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। हमारे देश की सबसे बड़ी चुनौती और अवसर हमारी आबादी में ही छिपे हैं। इसलिए कहने को कहा जा सकता है कि आजादी के इतने सालों बाद भी हर व्यक्ति तक सुविधा विशेष नहीं पहुंच पाई लेकिन भारत ने उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है। उदाहरण के तौर पर भारत हर गांव तक पक्की सड़क, हर 200 की आबादी वाले गांव तक बिजली पहुंचाने में करीब-करीब सफल हो गया है। वहीं, दूसरी ओर स्वच्छ पेयजल के क्षेत्र में हमें अभी भी बहुत चलना है। देश की करीब एक चौथाई आबादी स्वच्छ जल के अभाव में जीवन बसर कर रही है। हालांकि सरकार ने हर गांव तक पाइपलाइन के द्वारा टैप के थ्रू घरों में पानी पहुंचाने की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

देश में सड़क, हवाई और बिजली के क्षेत्र में उल्लेखनीय तेजी 1995 के बाद देखने को मिली। वर्तमान में प्रतिदिन 24 किलोमीटर नेशनल हाई-वे की सड़कें बन रही हैं। 1943 में जहां देश में सिर्फ 3.5 लाख किलोमीटर रोड नेटवर्क था, वहीं वर्तमान में छोटी-बड़ी सभी सड़कें मिलाकर करीब 60 लाख किलोमीटर लंबा रोड नेटवर्क है, जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा रोड नेटवर्क है। वहीं, अगर रेल यातायात की बात करें तो आजादी के समय करीब 60 हजार किलोमीटर लंबा रेलपथ था, जो वर्तमान में तीन गुना बढ़ गया है।

देश साधारण ट्रेन से मेट्रो तक पहुंच गया है और अब तो बुलेट ट्रेन की ओर हमारी तैयारियां पहुंच गई हैं। अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे विश्व के किसी भी शहर को मात देते हैं। अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे लगातार बढ़ रहे हैं, देश में प्रति माह वर्तमान में 1.1 करोड़ से अधिक यात्री हवाई सफर तय कर रहे हैं।

आजादी के समय प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 5000 क्यूबिक मीटर सालाना थी, जो लगातार घटकर अब 1700 क्यूबिक मीटर सालाना हो गई है। इसका सबसे बड़ा और मुख्य कारण भूमिगत जल का अधिक दोहन है। सिंचाई के लिए पानी की मांग बढ़ने के कारण भी भूमिगत जल ज्यादा खींचा जा रहा है। वर्ष 1951 में 2 करोड़ 26 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि तक सिंचाई की व्यवस्था थी, अभी भी देश में करीब आधी भूमि पर सिंचाई की सुविधा नहीं है। हमें नहर नेटवर्क को और अधिक प्रभावी रूप से बढ़ाना होगा। नदी जोड़ परियोजना इसमें अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभा सकती है।

इसी तरह, सिंचाई से जुड़ा हुआ सीधा सवाल बिजली का है। आजादी के बाद से इसमें उत्पादन और वितरण दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय विकास हुआ है। 1947 में जहां हम सिर्फ 1362 मेगावाट बिजली पैदा करते थे, जो मार्च 2015 में बढ़कर 267 गीगावाट तक पहुंच चुकी है। आजादी के वक्त प्रतिव्यक्ति बिजली की खपत मात्र 16.3 किलोवाट थी, जो 2015 तक 1010 किलोवाट हो चुकी थी। इस उपलब्धि के बावजूद बिजली की मांग में लगातार बढ़ोतरी ने आपूर्ति पर दबाव बनाए रखा है। फिलहाल देश में जितनी बिजली की मांग है, उससे अधिक उत्पादन भारत कर रहा है। देश बिजली का निर्यात तक करने में सफल हो गया है।